कला शिक्षाक्रम – एक प्रस्ताव

❑ शिव कुमार गांधी

प्रारंभिक स्तर पर कला-शिक्षण की स्थिति संतोषप्रद नहीं है, यह तो सच है । किन्तु इस क्षेत्र में कहीं कुछ भी नहीं हो रहा - यह कहना भी सही नहीं होगा । असल में कला-शिक्षण विषयक चिंतन और प्रयोग शिक्षा-विमर्श में भी हाशिए पर रहे हैं । हमारी कोशिश होगी कि हम ऐसी चीजों को आपके सामने लायें । इसकी शुरुआत दिगन्तर में निर्मित कला शिक्षाक्रम के प्रस्तावित दस्तावेज से कर रहे हैं । इस पर प्रतिक्रियाओं का स्वागत है । साथ ही कला-शिक्षण विषयक लेख एवं नवाचार संबंधी रिपोर्ट आमंत्रित की जाती है ।

पूर्व कथन

कला शिक्षा को लेकर दिगन्तर में हम काफी समय से विचार करते रहे हैं और हम मानते हैं कि प्राथमिक शिक्षा में कला शिक्षा का स्थान उतना ही महत्वपूर्ण है जितना भाषा या गणित का। क्योंकि सौंदर्य-बोध जीवन के लिए उतना ही जरूरी है जितना किसी भी प्रकार की अन्य समझ व ज्ञान । कला को दिगन्तर की समय सारणी में उतना ही समय दिया जाता रहा है जितना पर्यावरण अध्ययन शिक्षण या गणित शिक्षण को । परन्तु दिगन्तर के लिखित शिक्षाक्रम में एवं निर्मित शिक्षण सामग्री में कला पर उतना काम नहीं हुआ था जितना अन्य विषय क्षेत्रों पर । शिक्षाक्रम दस्तावेज में कला के स्थान को स्वीकारा गया है, उसके अध्याय के लिए स्थान तो है पर उस अध्याय में सामग्री अति संक्षिप्त है । शिक्षण सामग्री तो कुछ बनाई ही नहीं ।

आरंभ में यह मानकर चल रहे थे कि प्रत्येक शिक्षक सैद्धांतिक स्तर पर कला का महत्व समझ जाने पर स्वयं की अपनी क्षमताओं को विकसित करते हुए समुचित कार्य बच्चों से करवा पायेगा । आरंभ में यह बात ठीक भी लगी लेकिन प्रशिक्षण व शालाओं में कला कार्य थोड़े से मिट्टी के काम, दो चार क्रेयोन ड्राइंग्स, कुछ पेपर फोल्डिंग एवं दो चार गानों में सिमट गया । और यही चीज बच्चों के शिक्षण में भी हो गई । इसी के चलते सैद्धांतिक मान्यताओं एवं सीधे शिक्षण में कला के क्षेत्र में बहुत बड़ा अन्तर आ गया ।

इस अंतर को पाटने के लिए वर्ष भर पूर्व एक नया प्रयास आरंभ किया गया । विचार यह था कि दिगन्तर शिक्षाक्रम में खाली अध्याय (कला शिक्षाक्रम) पर समुचित कार्य किया जाए, शिक्षण सामग्री बनाई जाये । बच्चों के साथ काम करने की कोई सुविचारित योजना एवं विधि विकसित की जाये । इसी विचार प्रक्रिया का हिस्सा था कि हमने एक कला संदर्भ व्यक्ति शिव कुमार को एक वर्ष के लिए अपने साथ जोड़ा, इस अपेक्षा के साथ कि वह उक्त क्षेत्र में दिशा निर्धारित कर सके और कार्यों को क्रियान्वित कर सके।

वर्ष भर के कार्य के लिए मुख्यत: हमने तीन लक्ष्य अपने सामने रखे। पहला : शालाओं में कला कार्य का संवेदनशील वातावरण विकसित हो। दूसरा : शिक्षक बच्चों के बीच कला कार्य करवाने के लिए प्रशिक्षत हों । तीसरा : प्राथमिक स्तर का कला शिक्षाक्रम का लिखित रूप तैयार हो । इन तीनों लक्ष्यों को पाने के लिए जरूरी था कि संदर्भ व्यक्ति बच्चों व शिक्षकों के साथ समूहों में नियमित कार्य करे। बच्चों व शिक्षकों के साथ वर्ष भर कला कार्य के उपरान्त शिक्षाक्रम का एक आरंभिक प्रारूप विकसित हुआ है। इस शिक्षाक्रम को अभी लम्बी यात्रा करनी है । विचार और व्यवहार के स्तर पर स्पष्टता लानी है । और फिर एक ऐसे सरल एवं बोधगम्य रूप में इसे ढालना होगा जो प्रत्येक शिक्षक के लिए ग्राह्य बन सके । यह सब इस दस्तावेज पर व्यापक चर्चा से ही हो पायेगा । इसी उद्देश्य से यह यहां प्रस्तुत है । (दिगन्तर समूह)

● ● ●

प्रारंभ

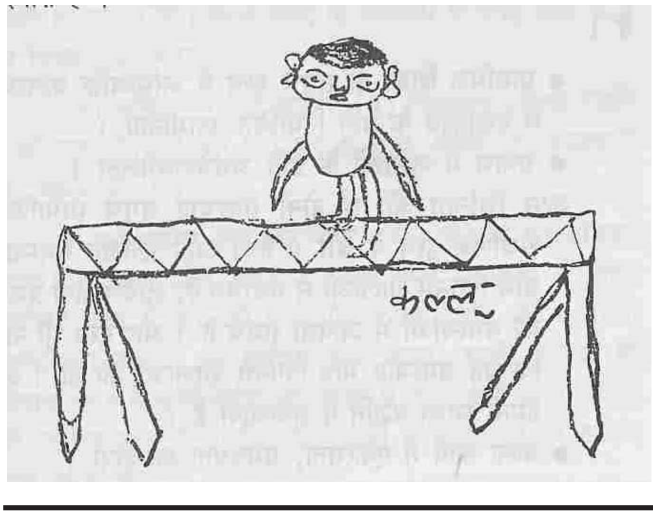
यूं तो शायद ही ऐसा कोई शिक्षाक्रम होगा जो अपने आप में पूरा हो व अपनी सिद्ध अवस्था प्राप्त कर चुका हो, खासकर उन शिक्षण संस्थाओं के शिक्षाक्रम तो कतई नहीं जो विचारशील व संवेदनयुक्त शिक्षण कार्य को अपनी प्रतिबद्धता में लक्षित करती हैं।

और समस्या तब अधिक बढ़ जाती है, जब कि एक ऐसे शिक्षण क्षेत्र 'अभिव्यक्ति कलाओं व हस्त कार्य' के शिक्षाक्रम को बनाने में जुटे रहे हैं, जिसकी अब तक प्राथमिक शिक्षा के समूचे दृश्य में हैसियत कमतर ही करके देखी जाती रही हो, और पूर्व में

कलाओं के बारे में न कोई शिक्षाक्रम की प्राथमिक तैयारी देखने पढ़ने, सोचने के लिए मिलेगी न कला कार्य की सुव्यवस्थित योजना, न शैक्षणिक-सामग्री व प्रशिक्षण आदि । बच्चों की समझ-संवेदना के विकास व उनके सांस्कृतिक पर्यावरण के बारे में उदासीनता तो नियोजित ही प्रतीत होती है जैसे कि हमारी शिक्षा व्यवस्था बच्चे को जड़, उबाऊ मशीन बना देने को कटिबद्ध हो । ऐसी स्थिति में कलाओं के शिक्षाक्रम पर कार्य करना, मुझ से अल्प अनुभवी के लिए एक बड़ी चुनौती जैसा ही है।

कला शिक्षण पर दिगन्तर शालाओं में वर्ष भर किए कार्य की उपज है यह शिक्षाक्रम। इसमें हम अनेक प्रकार के कला व कला शिक्षण संबंधी बहस मुबाहिसों, समूहों में योजना संबंधी फेर बदल, नई गतिविधियां बनाने, योजना अंकन के तौर तरीके विकसित करने, कला शोध समूह बनाने, कार्यशाला करने, प्रदर्शनियां करने, बच्चों की पत्रिका बातूनी बनाने, शालाओं में कला को अधिक समय देने जैसे विचारोत्तेजक अनुभवों से गुजरे । सभी के लिए यह भी किसी कला अनुभव से कम नही था । बच्चों के बीच कार्य के परिणामों ने उत्साहित ही किया। लेकिन यह सब शिक्षक-समूह की भागीदारी बिना संभव नहीं था । उनकी जिज्ञासाओं, समस्याओं पर अति विस्तृत चर्चा के धैर्य ने एक उत्साह का वातावरण ही बनाया।

बहरहाल, मैं अभी भी इसे बच्चों के बीच कार्य प्रारंभ करने की पहली योजना ही मानता हूं । मानता हूं उद्देश्यों के बिन्दुओं को काम की कसौटी पर और परखना है, समूह में किए कार्य और मिले नतीजों के बाद इन्हें अधिक सुदृढ़ होना है, इससे संबंधित अभ्यासों व समस्याओं पर विस्तृत कार्य होना है। इसके बावजूद कला-शिक्षा की मूल धारणा को यह दस्तावेज अभिव्यक्त करता है और संभवत: उन लोगों के लिए जो कला सृजन को मानवीय विमर्श के रूप में देखते हैं, यह काम का साबित होगा । ऐसा मेरा विश्वास है ।



शिक्षाक्रम की पृष्ठभूमि संबंधी कुछ बातें

''द ट्रयू मिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड इज द विजीबल, नॉट द इनविजिबल....'' विट्गेन्स्टाईन.

'आई नेवर डू ए पेन्टिंग एज ए वर्क ऑफ आर्ट । आल ऑफ दैम आर रिचेस । आई सर्च कान्सटेन्टली'......... पिकासो.

I

कला से अभिप्राय

यहां उद्देश्य कला की परफैक्ट परिभाषा गढ़ने का नहीं है बल्कि बच्चों द्वारा किए जाने वाले सृजन के सकारात्मक लक्षणों को चिन्हित कर समझने का है जिन्हें हम उक्त दो उदाहरणों से समझने का प्रयास करते हैं ।

एक व्यक्ति मिट्टी से मटका बनाता है । वह दुनिया में पहली बार एक ही तरह से एक ही मटका नहीं बनाता, बल्कि वह बार-बार उसकी पुनरावृत्ति करता है, और यह कार्य वह एक ही व्यक्ति नहीं बल्कि दुनिया के कई सारे व्यक्ति करते हैं, और उन मटकों का पूरी दुनिया में एक सा ही उपयोग होता है ।

अब इसी उदाहरण को एक भिन्न स्थिति में रखकर देखें ।

कि वही व्यक्ति उसी मिट्टी से मटके न बनाकर ऐसे रूप गढ़ता है जो कि उस व्यक्ति के स्वयं व दुनिया के आपसी संबंध के अनुभव पर आधारित अभिव्यक्तियां हैं, जिनके पीछे उस व्यक्ति की संवेदना, समझ, सौन्दर्य-बोध व चीजों को अर्थ देना है । और यह मिट्टी के रूप एक से नहीं हैं । दुनिया से बदलते संबंधों के साथ -साथ यह रूप भी बदल जाते है । कोई अन्य व्यक्ति इन रूपों की नकल तो कर सकता है लेकिन अपने अनुभव के आधार पर वह ठीक ऐसे ही रूप नहीं बना सकता, वह भिन्न होंगे, और इन रूपों की उपयोगिता भी सभी के लिए असमान होगी ।

इन दोनों उदाहरणों के विश्लेषण से हम कला को समझने के लिए कुछ निष्कर्ष निकाल सकते हैं ।

पहला उदाहरण

- इसमें मटकों की निर्मिति एक सी है जो कि पीढ़ीगत सीखे हुए तकनीकी कौशल से संबंधित है ।
- इसमें मटकों का उपयोग सामान्य परिस्थितियों में समान है ।
- सारे व्यक्ति मिट्टी को एक मटके का ही आकार देते हैं।
- सारे व्यक्ति उसी मटके की आकृति की पुनरावृत्ति करते हैं ।

दूसरा उदाहरण

- इसमें मिट्टी के विभिन्न रूप है जो कि मात्र पीढ़ीगत कौशल से अर्जित नहीं किए जा सकते । उक्त रूपों के पीछे व्यक्ति की संवेदना, कल्पनाशीलता, समझ, सौन्दर्य-बोध व चीजों को अर्थ देना है ।
- सभी व्यक्ति एक से मिट्टी के रूप नहीं गढ़ रहे, सभी के जीवन व दुनिया के आपसी संबंधों के आधार पर भिन्नताएं हैं ।
- इन मिट्टी के रूपों का अन्य के लिए उपयोग-पुनर्उपयोग भी भिन्न हैं ।
- इन मिट्टी के रूपों की पुनरावृत्ति नहीं हो रही । दुनिया व व्यक्ति के जीवन के बदलने के साथ-साथ यह कला रूप भी बदलते हैं ।
- मिट्टी से गढ़े गए इन रूपों से एक विशिष्ट भाषा बनती है ।

इन दोनों प्रकार के उदाहरणों के विश्लेषण से हम कला को परिभाषित कर सकते हैं ।

जो कला नहीं है

वे तकनीकी कार्य जिनकी पुनरावृत्तियां होती हैं व जिनका संबंध वस्तुओं के समान उत्पादन उपयोग के एकसेपन उपयोग से है वे कार्य कला नहीं हैं ।

जो कला है

वे कार्य जो दुनिया के बारे में व्यक्ति की संवेदना को व्यक्त करने में विशिष्ट भाषा का रूप लेते हैं जिनके सृजन में कल्पनाशीलता, नवीनता व विविधता हो और जिनके उपयोग पुनर्उपयोग में भिन्नताएं पाई जाती हों वह कार्य, कला कार्य है ।

उक्त परिभाषा के आधार पर हम कला की चारित्रिक विशेषताओं को चिन्हित कर सकते हैं या हम कह सकते हैं कि हम विशेषताओं पर जोर देना चाहते हैं ।

- कलाएं व्यक्ति व दुनिया के आपसी संबंधों की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति हैं जो कि विशिष्ट भाषा रूपों से संभव होती हैं।
- कला सृजन में कल्पनाशीलता, नवीनता, विविधता, सौन्दर्यात्मकता होती है जो कि दुनिया के प्रति संवेदनशील दृष्टि से संभव होती है ।
- कला के सृजन व पाठ के उपयोग में भिन्नताएं होती है। इनका उपयोग किसी मटके की तरह नहीं किया जा सकता। इनका संबंध व्यक्ति की संवेदना व समझ से होता है जो कि दुनिया को समझने व बदलने के काम में आती है।

II

प्राथमिक शिक्षा में बच्चों के लिए कला-शिक्षा की जरूरत व कला-शिक्षा के मूल विचार के बारे में वे अनुमानित बिन्दु जो कार्य प्रारंभ के समय की हमारी मूल धारणा को कहते हैं और जिनको आधार मानकर हमने शालाओं में व शिक्षाक्रम पर कार्य प्रारंभ किया ।

(अ)

- कि कला-सृजन, कलाओं का पाठ, कलाओं पर संवाद,दुनिया का संवेदनात्मक विवरण है ।
- कि कलाएं व्यक्ति की संवेदनशीलता को प्रखर बनाने, ज्ञान-निर्माण की प्रक्रिया में व क्षमताएं विकसित करने में सहायक सिद्ध होती हैं ।
- कि कलाओं द्वारा की गई अभिव्यक्ति/संप्रेषण मानव जीवन व उसके सौन्दर्य को संभव बनाती हैं ।

(ब)

- प्रत्येक बालक के अपने दुनियावी अनुभव हैं । अर्थात उन अनुभवों के आधार पर अपना दुनिया देखना है ।
- प्रत्येक बालक की अपनी निर्मित होने वाली कला भाषा की विषय वस्तु इसी दुनिया देखने के अनुभव पर आधारित/निर्भर है ।
- बच्चों के द्वारा बनाई गई रचनाएं उनके स्वयं के संसार की जटिलतम अनुभव रचनाएं हैं और हम बच्चों के इसी अनुभव संसार को आधार बनाकर कार्य कर सकते हैं

III

उन समस्याओं/प्रश्नों का उल्लेख जो कि कार्य प्रारंभ करते समय हमारे सामने थीं, परोक्ष-अपरोक्ष ढंग से प्रस्तुत शिक्षाक्रम उन्हीं समस्याओं पर कार्य करते हुए विकसित हुआ है ।

- प्राथमिक शिक्षा के समूचे दृश्य में अभिव्यक्ति कलाओं व हस्तकार्य के प्रति नियोजित उदासीनता ।
- समाज में कलाओं के प्रति असंवेदनशीलता ।

ऊपर चिन्हित की गई दोनों समस्याएं समूचे सामाजिक शैक्षणिक दृश्य के बारे में हैं । आगे लिखित समस्याएं सीधे दिगन्तर शालाओं से संबंधित हैं, लेकिन दोनों प्रकार की समस्याओं में आपसी संबंध है । और ऐसा भी नहीं कि यह समस्याएं मात्र दिगन्तर शालाओं की हों । यह हमारी शिक्षा पद्धति में सर्वव्यापी है ।

- कला कार्य में एकरसता, समरूपता का होना ।

- शिक्षकों में कलाओं व बच्चों के कला कार्य के प्रति तटस्थता व उदासीनता का होना ।
- बच्चों का स्वयं सीखना नहीं होना व कला कार्य में पूरी तरह से अध्यापक पर निर्भर होना अर्थात बच्चों द्वारा किए जा रहे कला कार्य का स्वयं के अनुभव संसार पर निर्मित न होना ।
- बच्चों के बीच कला कार्य पर संवाद का न होना ।
- शालाओं में कला कार्य की संवेदनशील परिस्थितियों का अभाव ।

मोटे तौर पर यह कुछ समस्याएं थीं जो कार्य प्रारंभ की पृष्ठभूमि बनी । हमने शालाओं में हो रहे कार्यों की समीक्षा की, संबंधित समस्याओं को ध्यान में रखते हुए वर्ष भर कार्य के लिए एक सुदृढ़ योजना बनाई । जिसमें पूर्व में हो रहे कार्यों में अनेक प्रकार के परिवर्तन कर नए तरीके से कार्य प्रारंभ किया । जैसे :

1. सौन्दर्य-कला संबंधित विषय समूह जिसमें भाषा के दूसरे कालांश में की जाने वाली गतिविधियों नाटक, कहानी, कविता आदि को कला एवं हस्तकार्य कहे जाने वाले विषय समूह- चित्रकला, पेपर कार्य, क्ले, कारपेण्टरी आदि से जोड़ कर एक कालांश बनाया । अर्थात दिन भर की समय-सारणी में जहां गणित शिक्षण, पर्यावरण शिक्षण आदि के चालीस मिनट के कालांश होते थे, वहीं 'कला' के लिए अस्सी मिनट का कालांश रखा गया । इसका मुख्य कारण यह था कि सौन्दर्य-संबंधी कार्यों के मूल प्रेरक संदर्भ समान हैं । निश्चित रूप से प्रक्रियाएं, सामग्री में भिन्नताएं हैं, लेकिन मौटे तौर पर कुछ विशिष्ट दृष्टि, कौशल, शिल्प, दक्षताओं के माध्यम से देखना-समझना-व अपने आस-पास की 'दुनिया' को अर्थ देना होता है । सौन्दर्य संबंधी विषयों के कालांश एक कर देने से 'विषय-वस्तु' की विविधता को लेकर संभावनाएं बढ़ जाती हैं। कह सकते हैं कि विषय वस्तुओं का आन्तरिक संबंध ठोस रूप में घटित हो सकता है । इससे कला के कालांश के लिए कार्य करने का विषय समूह बना ।

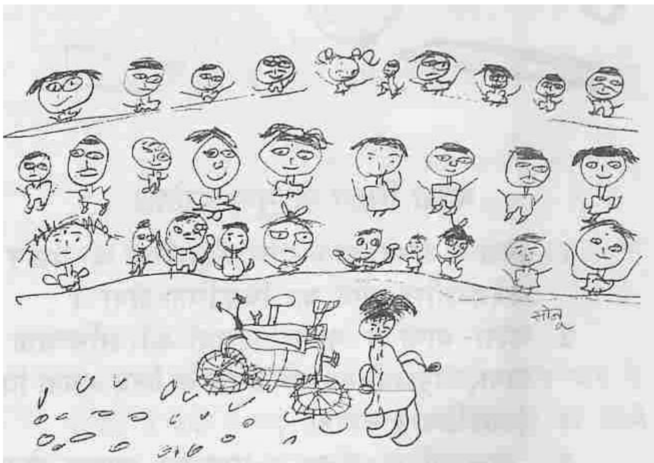
(अ) कविता, नाटक, कहानी (ब) चित्रकला (छापा पद्धति व कोलाज भी) (स)क्ले (द) संगीत, नृत्य, गायन (य) दस्तकारी (र) कारपेन्टरी ।

2. कला शोध समूह का गठन - छह शिक्षकों को जोड़कर बनाए इस कला शोध समूह का कार्य तीनों शालाओं में विषय संबंधित काम में आ रही उपयोगी - अनुपयोगी, नई - पुरानी सामग्री का संकलन कर समीक्षा कार्य करना, उनकी गुणवता पर शिक्षक समूह में चर्चा करना, शालाओं में कला कार्य के वातावरण की देखरेख करना व संबंधित समस्याओं को रेखांकित कर उन पर कार्य करना था।

3. योजना व अंकन का कार्य प्रारंभ - हमने समूह में कार्य की विस्तृत योजना व अंकन करने का प्राथमिक ढांचा बनाया और उस पर कार्य प्रारंभ किया । इसमें हमने ध्यान दिया कि शिक्षक समूह में बच्चों की गतिविधियों, उनके सवालों, भाषा, कार्य के प्रति रुचि, समस्याओं आदि का अवलोकन करें व योजना बनाते समय अपने पूर्व अनुभव को काम में लेवें ।

4. समस्त कार्यों की होने वाली साप्ताहिक शेयरिंग में व कला पर शिक्षकों द्वारा की गई योजना-अंकन पर चर्चा के लिए बैठकों में पर्याप्त समय दिया गया । चर्चाओं में हम-समूह में कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं, परिणामों, कलाओं की प्रकृति उनके स्वरूप और बच्चों द्वारा किए कार्य के प्रति समझ बनाने पर ध्यान दिया ।

5. शालाओं में कला का वातावरण बने इसके लिए बच्चों द्वारा किए कला कार्य की प्रदर्शनियां आयोजित की गई । इसके साथ-साथ बच्चों के लिए कला कार्य को प्रस्तुति व संवाद के लिए एक स्थायी मंच मिले और सीखने का अवसर बने इसके लिए बच्चों की एक मासिक पत्रिका 'बातूनी' बनाने का कार्य प्रारंभ किया । बातूनी में बच्चों के बनाए चित्र, कविताएं, कहानियों आदि को स्थान दिया गया ।'बातूनी' बच्चों के बीच लोकप्रिय हुई । यह एक शैक्षणिक गतिविधि के रूप में ही थी । इसमें बच्चों की भागीदारी मुखर रूप में तो थी ही, बच्चे बातूनी के लिए रचनाएं बनाने, देने, पढ़ने के प्रति सचेत होने लगे ।



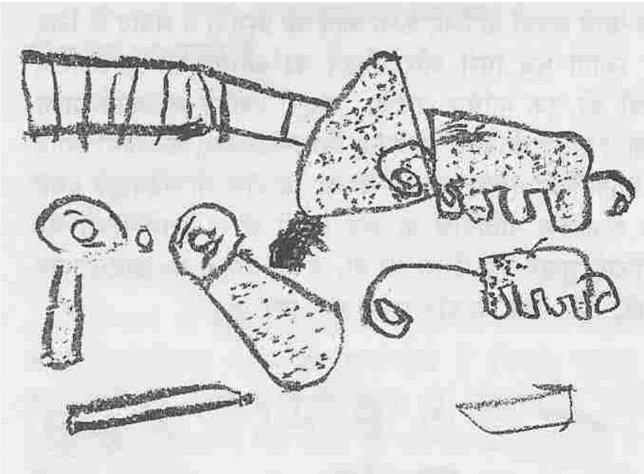
6. हमने कला कार्य में काम आने वाली सामग्री की विविधता व गुणवत्ता पर जोर दिया व नई तरह की सामग्री काम में ली; जैसे क्ले के लिए मिट्टी अच्छी हो, चित्र बनाने के लिए कई आकार के कागज हों, रचनाएं प्रदर्शित करने के लिए समूह कक्ष के भीतर व बाहर सॉफ्ट बोर्ड लगे हों, बच्चे जिस कागज पर कार्य करते हैं

उसको हार्ड बोर्ड पर रख कर सकें । इसके लिए व्यवस्था की गई। क्रेयॉन वाटन-कलर, ब्रश की गुणवत्ता पर ध्यान दिया गया ।

7. सृजन में बाधक कार्यों पर प्रतिबन्ध लगाया गया; जैसे कि चित्रों की नकल करके चित्र बनाना आदि ।

8. समूहों में बच्चों के साथ कार्य करने के लिए सभी कला विषय-क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए मासिक रूप से समय निर्धारण कर योजनाएं बनाई गई एवं समय समय पर कार्यशालाएं की गई।

वर्ष भर कार्य करने के बाद हमने पाया कि इस तरीके से कला में कार्य करने से शिक्षकों में कला कार्य के प्रति प्रारंभिक समझ का विकास तो हुआ ही है । बच्चों में भी कार्य के प्रति उत्साह देखा गया । उनके सृजन कार्य में बाल सुलभ कल्पनाशीलता, विविधता प्रकट होने लगी । खास बात यह कि बच्चे स्वयं को अभिव्यक्त करने के अवसरों की महत्ता को महसूस करने लगे और उनमें कलाओं के प्रति रूचि विकसित होने लगी है ।



कला शिक्षा के मुख्य उद्देश्य

1. **बच्चों में अपने आस-पास की दुनिया को देखने की संवेदनशील दृष्टि का विकसित होना ।**
2. **कला-भाषा में अपने अनुभवों को अभिव्यक्त कर पाना, अनुभवों से अभिव्यक्ति के लिए अपना विषय (आइडिया) बनाना ।**
3. **कलाओं के सृजन व पाठ का आनन्द लेना । सृजन को अपने दैनन्दिन जीवन, समुदाय, दुनिया के संदर्भ में देखना, व्याख्यायित करना, उसके प्रति अपने मत बनाना, दूसरों के मत को समझना, सृजन व पाठ पर लिखित, मौखिक संवाद करना ।**
4. **अभिव्यक्ति के लिए कला-भाषा के उपकरणों के प्रयोग में दक्षता प्राप्त करना, सामग्री की प्रकृति, गुणों को समझना, अभ्यास करना, कौशल से कार्य करना ।**
5. **जीवन-समाज-दुनिया में कलाओं की मूल्यवत्ता को समझना व इनके प्रति अनुराग महसूस करना ।**
6. **कलाओं के इतिहास/वर्तमान की संक्षिप्त जानकारियों का होना ।**
7. **कलाओं के पाठ से प्राप्त संवेदनाओं, मूल्यों, क्षमताओं का कर्म में परिलक्षित होना ।**
8. **अपने आस-पास के वातावरण के सौन्दर्यकरण के प्रति सजग होना ।**

1. बच्चों में अपने आस-पास की दुनिया को देखने की संवेदनशील दृष्टि का विकसित होना ।

आस-पास की दुनिया को विस्तृत अर्थ में 'जगत' कहें तो वही कला की विषय-वस्तु है, सारे पाठ इसी से जन्म लेते हैं, विकसित होते हैं, इसी से अर्न्तक्रिया पर संवेदन-समझ विकसित होती है और मैं इसी 'जगत' (विषय-वस्तु) को संवेदनशील दृष्टि से देखने/अर्न्तक्रिया पर जोर दे रहा हूं । 'देखने' से आशय सिर्फ कोरी आंखों से देखना नहीं बल्कि अर्न्तक्रिया से है । जिसके पीछे व्यक्ति की संवेदना-समझ कार्य करती है । जैसे कि वह बालक जो बारिश में, बारिश की गिरती बूंदों की आवाजों, आस-पास नहाए हुए घरों, फरफराते पेड़-पौधों, आ रही मोर की आवाजों के प्रति राग नहीं महसूस करेगा, इस दृश्य में लग रही सुन्दर चीजों का आनन्द नहीं ले पाएगा, इस सुन्दरता को देख कर आत्मसात नहीं कर पाएगा तब तक बारिश के इस दृश्य का अपना अच्छा चित्र वह नहीं बना पाएगा न इस पर अपना सूक्ष्म अनुभव लिख या सुना पाएगा । और न ही इसके आधार पर कल्पना कर पाएगा ।

कहने का तात्पर्य यह कि बच्चों के अनुभव-संसार में आने वाली चीजों/बातों से वह सघन संबंध बना पाए, तभी वे अपने अनुभव-संसार की विशिष्टता को पा सकते हैं । और इस 'विशिष्टता' को अभिव्यक्त कर पाने की क्षमता ।

यूं तो बच्चों के अनुभव संसार की कोई सीमा रेखा नहीं बनाई जा सकती लेकिन कुछ क्षेत्र चिन्हित किए जा सकते हैं जिन के आधार पर हम कार्य कर सकते हैं । उसके प्रति समझ बना सकते हैं । जैसे :-

- प्रकृति को देखना, महसूस करना, चर्चा करना-पेड़-पौधे, आकाश-बादल, पक्षी, बारिश, रात-दिन बदलती ऋतुएं, पानी, रंग आदि ।
- परिवार, समुदाय में व्यक्तियों के आपसी व्यवहार, संबंध, क्रिया-कलाप, भाषा, समस्याएं व इनके द्वारा अपने ऊपर पड़ रहे प्रभाव ।

- आस-पास घट रही घटनाएं, बदल रहे दृश्यों के आंतरिक संबंधों को देखना ।
- वस्तुओं के आकार प्रकार, उनके चरित्र ।
- समुदाय में, अपनी शाला में, साथियों के बीच गीत/कविताओं/कथाओं/चित्रों/नाटकों आदि को देखना, चर्चा करना ।
- स्वयं के अनुभव, भाषा, क्रिया-कलाप, आस-पास की चीजों से बन रहे संबंध आदि देखना ।

ऊपर चिन्हित किए गए उपबिन्दु कुछ उदाहरण मात्र हैं और यह समझने, चर्चा करने, कार्य के लिए विषय बनाने के तीनों ही संदर्भ में लक्षित किए जा सकते हैं ।

2. कला-भाषा रूपों में अपने अनुभवों को अभिव्यक्त कर पाना, अनुभवों से अभिव्यक्ति के लिए अपना विषय (आइडिया) बनाना व विषय की कल्पना कर पाना ।

वैसे तो यह बिन्दु अपने आप में स्पष्ट ही है । लेकिन इसके कुछ उप-क्षेत्र बनाए जा सकते हैं, जो बच्चों द्वारा अपना विषय बनाने के क्रमिक विकास को चिन्हित करते हैं ।

- प्राप्त अनुभवों के बारे में अपना मत बनाना, अभिव्यक्ति के आत्मविश्वास को पाना ।
- स्वयं द्वारा तय किए गए विषय की अभिव्यक्ति कर पाना, विषय को आगे विकसित कर पा सकना ।
- विषय अनुभवों के आधार पर विषय की कल्पना कर पाना व उसे अभिव्यक्त करना ।
- स्वयं द्वारा अभिव्यक्ति के आत्मविश्वास को पाना।
- अपनी अभिव्यक्ति-विविध कला-भाषा रूपों में कर पाना।
- विषय व उपकरणों से अभिव्यक्ति के प्रयोग करना ।
- अभिव्यक्ति की प्रक्रिया की अवस्था को बनाना, महसूस करना व कार्य करना ।
- अपना कार्य क्षेत्र व कार्य-योजना स्वयं तय करने की दिशा में बढ़ना ।

3. कलाओं के सृजन व पाठ का आनन्द लेना व इन्हें अपने दैनन्दिन जीवन-समुदाय-दुनिया के संदर्भ में देखना, व्याख्यायित करना, उसके प्रति अपने मत बनाना, दूसरों के मत को समझना, सृजन व पाठ पर लिखित-मौखिक संवाद करना ।

कलाओं में बच्चे जो कार्य कर रहे हैं वह उनके स्वायत्त अनुभव-संसार की अभिव्यक्तियां हैं । यह हम पहले ही मानकर चलते हैं, या कहना चाहिए ऐसा हो, इस पर जोर देना चाहते हैं । बच्चों का अनुभव संसार उनके आस-पास के जीवन-समुदाय दुनिया से अर्न्तक्रिया पर विकसित होता है यह एक जटिल मनोविज्ञानिक प्रक्रिया है ।

यह बिन्दु इस बात पर जोर देता है कि बच्चों का अनुभव संसार, दुनिया के जिन क्षेत्रों से संबंधित है, कलाओं के द्वारा वह उनसे सघन संबंध बनाएं, कला के सृजन में व कलाओं के पाठ में।

इसे एक उदाहरण से समझते हैं ।

एक बालिका, एक गरीब व्यक्ति पर कहानी लिखती है और वह गरीब व्यक्ति उसके समुदाय का हिस्सा है । वह बालिका के संसार में प्रवेश करता है, बालिका की संवेदना-समझ पर कुछ प्रभाव पड़ते हैं यह प्रभाव ही उसके अनुभव हैं जिन्हें बालिका अपनी कहानी में अभिव्यक्त करती है ।

हम इसे सकारात्मक सूचक कहेंगे, कि बालिका का कहानी लिखना, बालिका के आस-पास के दृश्य के संदर्भ में देखना है ।

अब इसे कहानी के पाठ की स्थिति में देखें कि अन्य बालक इस कहानी को पढ़कर समुदाय के किसी व्यक्ति से जोड़कर देख पायें व एक संवेदना महसूस कर पाए कि यह कहानी उसी के समुदाय के किसी हिस्से के बारे में है और 'ऐसी' स्थिति का वर्णन करती है ।

उक्त बिन्दु के समूह में कार्य करने के जो क्षेत्र बनाए जा सकते हैं वे निम्न हैं ।

- बच्चे जो सृजन कर रहे हैं उसकी विषय वस्तु को वे अपने जीवन-समुदाय-दुनिया के संदर्भ में अपने अनुभव के आधार पर देख पाएं ।
- कलाओं के पाठ से अपने आस-पास के प्रति समझ बना पाना ।
- अन्य की रचना पर लिखित/मौखिक संवाद कर पाना, संवाद साथियों से, शिक्षक से, परिवार-समुदाय में ।
- पढ़े, देखे, सुने गए कला सृजन को समझ पाकर उन पर प्रश्न करना ।
- पूछे गये प्रश्नों का जवाब दे पाना ।
- सृजन पर किए जा रहे संवाद को अपने आस-पास के संदर्भ में देख पाना, उस आधार पर संवाद को आगे बढ़ाना व सृजन को विकसित करना ।
- सृजन के प्रति अपना मत बना पाना, मत को प्रस्तुत कर पाना।
- दूसरों के मत को सविनय सुनना, समझना, उपर्युक्त न लगने पर तर्क प्रस्तुत कर पा सकना ।
- विषय-वस्तु पर सौन्दर्य, दर्शन विज्ञान, नैतिकता, पर्यावरण आदि दृष्टियों से संवाद करना ।

(यह अन्तिम बिन्दु जटिल है, इसकी प्रकृति व मंतव्य भिन्न है । अभी यह अनुमान मात्र ही है लेकिन समूह में कला पर हो रही बातचीत के क्षेत्रों की ओर इशारा करता है । आवश्यकता इसकी सटीक योजना पर आगे कार्य करने की है ।)

जब हम कहते हैं कि बच्चे सृजन व पाठ का आनन्द ले पाएं तो इसका अर्थ किए जा रहे कार्य की सार्थकता महसूस करने व उसकी परिस्थितियां बनाने से है । इसमें आनन्द आया या नहीं इसके सूचक बच्चों के सृजन व प्रक्रिया में ही देखे जा सकते हैं ।

जैसे -

- आनन्द अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का ।
- आनन्द अर्थ देने, समझने, समझाने का ।
- आनन्द कार्य प्रक्रिया का, सृजन अवस्था का ।
- आनन्द विषयों, उपकरणों पर कार्य का।
- आनन्द दृश्य, ध्वनि, रेखा, रंगों से अर्न्तक्रिया का ।

4. अभिव्यक्ति के लिए कला-भाषा के उपकरणों, तकनीक के प्रयोग में दक्षता प्राप्त करना, सामग्री की प्रकृति, गुणों को समझना, अभ्यास करना, कौशल से कार्य करना ।

इस बिन्दु में सबसे पहले यह मुख्य बात समझने की है कि तकनीक मुख्य ध्येय नहीं है। मुख्य ध्येय को पाने की एक निमित्त मात्र है, सिर्फ एक तरीका है, साधन है ।

लेकिन इसके बिना काम भी नहीं चल सकता, जैसे-पानी के रंग से ब्रश चलाकर चित्र बनाने में ब्रश चलाना मुख्य नहीं है, मुख्य है कि ब्रश चलाकर मैं बना क्या रहा हूं ? लेकिन जो बनाना चाहता हूं वह बिना ब्रश चलाये भी नहीं बना सकता। मुझे वह चित्र बनाने के लिए ब्रश लेना होगा । यह तो तय है कि कोई न कोई उपकरण तो होगा ही और उसका अभ्यास भी जरूरी होगा । लेकिन मूल ध्येय को पाने के सहायक के रूप में, यह मात्र चित्रकला ही नही,साहित्य, नाटक, संगीत, कारपेन्टरी, क्ले आदि में ।

अलग-अलग क्षेत्रों के संदर्भ में उपकरणों के विवरण आगे स्पष्ट कर दिए गए हैं । यहां हम मूल धारणा संबंधी कुछ बिन्दुओं का जिक्र कर सकते हैं ।

- बच्चे तकनीक से मनचाहे प्रभाव पाने के लिए प्रयोग कर पाएं । एक निश्चित ढ़र्रे से न बंधे रहें ।
- उपकरणों के रख-रखाव उनको कौशल से काम में लेने की ओर ध्यान दे पाएं ।
- उपकरणों के प्रयोग में दक्षता हासिल करें, कार्य को गति से कर पायें।
- उपकरणों की प्रकृति, गुणों के मूल स्वभाव को समझ कर अपने तरीके ईजाद करें ।
- एक ही उपकरण से बंध कर न रहें, भिन्न-भिन्न तरीकों से कार्य कर पाएं ।

5. जीवन-समाज-दुनिया में कलाओं की मूल्यवत्ता को समझना व इनके प्रति अनुराग महसूस करना ।

कलाओं की मूल्यवत्ता को समझना अपने आप में कोई सुनिश्चित अवस्था नहीं है और न ही बच्चों के बीच इस बिन्दु के संदर्भ में कोई कार्य अपेक्षित है । लेकिन किए जा रहे अन्य कला संबंधी कार्यों की सार्थकता के संदर्भ में इस बिन्दु को लक्षित किया जा सकता है । कहा जा सकता है कि यह अन्य कार्यों का परिणाम भी है और उद्देश्य भी ।

कहने का आशय यह है कि कलाएं बच्चों के जीवन में एक आवश्यक जरूरत के रूप में विकसित हों, कला सृजन, कलाओं के पाठ, कलाओं द्वारा उत्पन्न मानवीय विमर्श बच्चों के जीवन का हिस्सा बनें ।

6 कलाओं के इतिहास/वर्तमान की संक्षिप्त जानकारियों का होना ।

यह बिन्दु अपने आप में मुख्य उद्देश्य नहीं है । मुख्य उद्देश्यों को पाने का एक रास्ता भर ही है । इस बिन्दु का स्थान अलग-अलग विषयों के संदर्भ में कार्य करने पर ही सुनिश्चित हो सकेगा। यहां यह प्राथमिक रूपरेखा के ढंग में ही है । यहां सभी विषय क्षेत्रों को सम्मिलित रूप में दिया जा रहा है । इस बिन्दु का आशय यह नहीं है कि हम बच्चों को बहुत सूक्ष्म क्रम व क्षेत्रवार विवरणों से भरे संपूर्ण इतिहास की जानकारी की बात कर रहे हैं। यहां आशय मात्र छोटी सी झलक से है, यह बात अवश्य है कि इसके लिए पाठ्य सामग्री बनानी होगी । जो रूपरेखा अभी मेरे सामने बन रही है उसमें हम कुछ फोटोग्राफस, कुछ चित्रों की मदद व कम से कम शब्दों में छोटी पुस्तिकाएं तैयार कर सकते हैं जिसमें हमें एक झलक मिल सके । और संभवत: वह बच्चों के लिए रोचक साबित होगी । जिन विषय क्षेत्रों में हम कार्य कर सकते हैं वे निम्न हैं ।

- समुदाय में चली आ रही कला परम्पराओं की जानकारी का होना (कथा कहने की वाक् परम्परा, मेले, त्यौहार, खेल, गीत चित्र, नाटक/नौटंकी, मांडणा, रंगोली आदि के बारे में ।
- सर्कस, मदारी का खेल, करतब, कठपुतली के खेल, जादू आदि के बारे में ।

- समुदाय व हिन्दी भाषी साहित्य के बारे में । (जैसे : कालिदास की कहानी, लोक साहित्य की कथाएं, कविताएं, रामायण, महाभारत, गालिब, कबीर, प्रेमचंद आदि के जीवन व साहित्य के संक्षिप्त शब्द चित्र ।)
- चित्रकला में भित्ति चित्रण, गुफाओं में बने चित्र, प्राचीन मूर्तियों के बारे में, स्थापत्य के बारे में ।
- बायस्कोप, मूक सिनेमा, वाक् सिनेमा, रंगीन सिनेमा के बारे में ।
- संगीत के साजों के बारे में, इनसे जुडे संगीतज्ञों के बारे में।
- अन्य स्थानीय कलारूपों के बारे में ।
- वर्तमान में कार्य कर रहे कलाकारों आदि के बारे में ।

7. कलाओं के सृजन व पाठ से प्राप्त संवेदनाओं, मूल्यों, क्षमताओं का कर्म में परिलक्षित होना ।

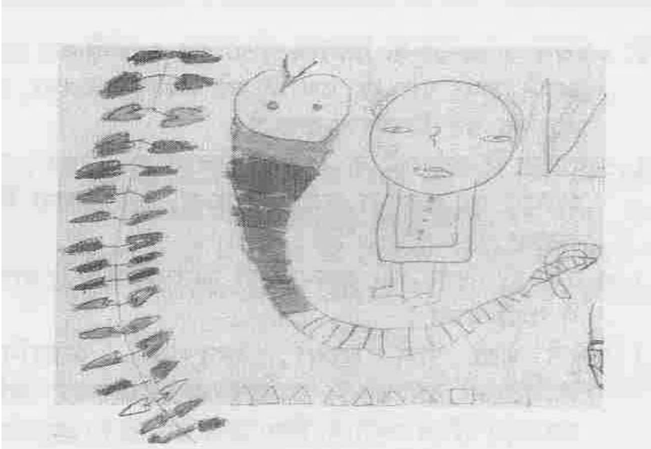
यह बिन्दु पूर्ण रूप से तो कला शिक्षाक्रम का हिस्सा नहीं है बल्कि शिक्षा के उद्देश्यों का एक अंग ही है । यहां इसके उल्लेख की आवश्यकता पूर्व में चिन्हित किए गए बिन्दुओं से जोड़कर देखने पर महसूस की जा रही है । बच्चों का मस्तिष्क किसी मशीन का डिब्बा तो नहीं है कि डिब्बे में कुछ चीजें डाली जाएं और वह मशीन अपेक्षित कार्य करने लगेगी । बच्चे अनेक क्षेत्रों से अनेक प्रकार के प्रभाव ग्रहण करते हैं, उसी से उनकी समझ बनती है और उसी आधार पर वह समाज में अपनी प्रस्थिति बनाते हैं और अपनी भूमिका निभाते हैं ।

आशय यह है कि कला के सृजन व पाठ से वह जिन क्षेत्रों की अर्न्तक्रिया में आते हैं जिससे कि उनके संवदेन समझ पर प्रभाव पड़ता है और वह उनके पूर्ण व्यक्तित्व का हिस्सा बनती हैं, को वे अपने जीवन में क्रियान्वित कर पाएं ।

8. अपने आस-पास के वातावरण के सौन्दर्यकरण के प्रति सजग होना ।

यह बिन्दू अपनी विषय-वस्तु से ही स्पष्ट है कि बच्चों की सामान्यत: पसन्द-नापसन्द, रूचियों आदि में उनका सौन्दर्य-बोध विकसित हो पाए, वे इसकी ओर ध्यान दे पाएं, जिस समुदाय में वे रहते हैं, जिस शाला समूह में कार्य करते हैं वह सुरूचि सम्पन्न तरीके से व्यवस्थित व सुन्दर लगे । बच्चे जो कार्य करते हैं उसमें एक नफासत, सुघड़ता हो।

बच्चों के प्रत्येक कार्य, उनके व्यक्तित्व में उनका अपना सौन्दर्य-बोध शामिल हो । जिसके आधार पर वे अपने कार्यों को अपनी रूचि से अंजाम दे पाएं ।



विषय क्षेत्रवार उप-उद्देश्य

इसमें क्रमश: चित्रकला, साहित्य, नाटक, हस्तकार्य के बारे में विवरण है, नृत्य व संगीत पर कार्य करना अभी शेष है ।

चित्र कार्य के बारे में

उक्त क्षेत्र में चित्र कार्य के विभिन्न आधारों का वर्गीकरण करके प्रस्तुत किया गया है । (विषय, रंग, रेखा, आकृति, संयोजन व अंतराल, टेक्शचर, उपकरण, संवाद) यह अलग भाग समझने के लिए बनाये गए हैं जो कि पूर्ण चित्र निर्माण में सहायक के तौर पर मिलकर ही पूरे चित्र को बनाते हैं, इसलिए अलग अलग भागों पर ध्यान देना भी जरूरी है व अभ्यास करना भी ।

इसी क्षेत्र में कोलाज व छापा पद्धति को भी शामिल माना गया है ।

उद्देश्य/क्षमतायें/दक्षताएं

1. प्रकृति में, अपने आस-पास की दुनिया का अवलोकन करना, देखना, चित्र कार्य के लिए अपना विषय (आइडिया) बनाना, विषय को विकसित (एक्सपलोर) कर पाना, विषय की कल्पना कर पाना । (कोई सीमा तय नहीं की जा सकती ।)

प्रवेश

1.1 प्रकृति व अपने आस-पास की दुनिया को देखना, स्वयं को सुन्दर लगने वाली चीजों पर चर्चा करना, उन्हें अपना विषय बनाना।

1.2 विषय को अपने आस-पास से जोड़कर देखना ।

1.3 समूह, शाला, परिवार, समुदाय में चित्रों व इनसे संबंधित कला रूपों का अवलोकन करना, चर्चा करना ।

1.4 स्वयं व अन्यों के क्रियाकलापों का अवलोकन करना, अपने ऊपर पड़ रहे प्रभावों को चिन्हित करना, उक्त अनुभव को विषय बनाना ।

1.5 दुनिया में वस्तुओं के आपसी संबंधों को देखना, उनके आधार पर कल्पना कर पा सकना, उसे अपना विषय बनाना ।

1.6 एक ही विषय को कल्पना से अनेक तरीकों/माध्यमों में दर्शा पाना।

1.7सुने-देखे गये दृश्यों, अनुभवों, कहानियों, कविताओं,नाटकों में अपना पाठ/अनुभव चिन्हित करना, चित्रित करने के लिए उन्हें अपना विषय बनाना।

1.8 उप समूहों में चर्चा कर विषय निर्मित कर पाना।

1.9 वस्तु चित्रण के सरल अभ्यास कर पाना ।

1.10 मिश्रित माध्यमों में कार्य कर पाना ।

2. रंग के बारे में

पहला चरण (प्रवेश)

2.1 प्रकृति में विभिन्न प्रकार के रंगों का अवलोकन कर पाना, नाम जानना, उन्हें विशेषण सहित नाम भी देना, जैसे दोपहर के आसमान जैसा नीला, तोते की चोंच जैसा लाल आदि ।

2.2 एक ही रंग की अनेक वस्तुओं को चिन्हित कर पाना, जैसे लाल रंग की तोते की चोंच, लाल रंग का फूल आदि । रंगों में भेद को चिन्हित कर पाना जैसे लाल, हरा, नीला आदि ।

2.3 आकृतियों में कौशल से रंग भर पा सकना ।

2.4 सीधे रंगों से चित्र बना पा सकना ।

दूसरा चरण

2.1 प्रकृति में विभिन्न प्रकार के रंगों का अवलोकन कर पा सकना, नाम जानना, उन्हें विशेषण सहित नाम भी देना, जैसे दोपहर के आसमान जैसा नीला, तोते की चोंच जैसा लाल, काई जैसा हरा आदि ।

2.2 विषय वस्तु को उपयुक्त रंग के साथ परिस्थितिनुसार दक्षता से काम में लेना ।

2.3 दो-तीन रंगों के मिलाने पर नए रंग विकसित कर पाना। जैसे हरा और पीला मिलाने, काला और सफेद मिलाने, नीला और हरा रंग मिलाने पर कौनसा नया रंग प्राप्त होगा?

2.4 रंगों की शेड्स/टोन बना पाना । जैसे रंग को हल्के से गहरे की ओर ले जाना, कि लाल में कितना सफेद मिलाये तो वह हल्का लाल होगा व कितना सफेद मिलाने पर कम हल्का लाल होगा या कितना काला मिलाने पर वह गहरा होगा ?

2.5 नए रंग संयोजन विकसित कर पाना। जैसे अनुमान लगाना कि चित्र में एक साथ कौन-कौन से रंग काम में लेने पर वह अधिक सुन्दर दिख सकता है ? कि क्या हरे के साथ पीला काम में लेने या काले के साथ भूरा काम में लेने पर वह सुन्दर दिखेगा ?

3. रेखा के बारे में

पहला चरण (प्रवेश)

3.1 अपने आस-पास आकृतियों की विभिन्न प्रकार की रेखाओं का अवलोकन करना, देखना । जैसे - पेन्सिल की सीधी रेखा, दीवार व छत को जोड़ने वाली रेखा, पेड़ के तने, पत्ते की रेखा आदि ।

3.2 विभिन्न माध्यमों में रेखाओं से अमूर्त आकार विकसित कर पाना ।

दूसरा चरण

3.1 अपने आस-पास विभिन्न प्रकार की रेखाओं का अवलोकन करना, देखना, चिन्हित कर पाना ।

3.2 रेखाओं को आकृतियों के प्रथम स्तर के रूप में समझ पाना व आकृतियों में रेखाओं के पैटर्न चिन्हित कर पाना । जैसे पहिये की गोल रेखा, चश्मे की गोल रेखा, नाक, कान की गोलाई लिए रेखा आदि।

3.3 विभिन्न माध्यमों से अनेक प्रकार की रेखाओं को बनाने के अभ्यास करना, उनसे अमूर्त आकृतियां व संयोजन विकसित करना।

3.4 रेखाओं से शेड्स/ टोन बना पाना, विभिन्न प्रकार के प्रभाव दर्शा पाना । जैसे कि पेन्सिल को गहरे दबाव से चलाने पर वह गहरा प्रभाव देगी, और हल्के दबाव से चलाने पर हल्का । दबाव द्वारा विभिन्न प्रकार से कई तरह के प्रभाव पैदा कर पाना ।

3.5 रेखाओं की गति व स्थिरता का आकृतियों में अवलोकन करना व चित्र कार्य में रेखाओं से गति व स्थिरता दर्शा पाना। जैसे चलती हुई गाड़ी, उड़ती हुई पतंग, चिड़िया की गति, रखी हुई गिलास, टेबल की स्थिरता ।

4. आकृति के बारे में

पहला चरण (प्रवेश)

4.1 अपने आस-पास विभिन्न प्रकार की आकृतियों का अवलोकन करना, देखना ।

4.2 आकृतियों का आपस में व रेखा, रंग, टेक्शचर, संयोजन से संबंध बनाकर देखना। जैसे कि कमरे में रखी एक आकृति है टेबल, उसी की रेखा देखना कि कहां वह गोलीय है कहां कोणीय इसका रंग, टेबल की सतह कैसी है कमरे में कहां, कैसे रखी है कि सुन्दर लगे ?

दूसरा चरण

4.1 प्रकृति में अपने आस-पास विभिन्न प्रकार कि आकृतियों का अवलोकन करना, देखना ।

4.2 आकृतियों में समान-असमान पैटर्न चिन्हित कर पाना। परस्पर तुलना कर पाना । जैसे - डिब्बा चौकोर है, गेंद गोल ।

4.3 आकृतियों से नये प्रकार के संयोजन बना पाना । जैसे एक दो आकृतियों को विभिन्न प्रकार से कागज पर बनाना।

5. संयोजन एवं अंतराल के बारे में

पहला चरण (प्रवेश)

5.1 प्रकृति में अपने आस-पास की वस्तुओं के संयोजन व अंतराल/अनुपात का अवलोकन करना, देखना । जैसे कि समूह में कौनसी वस्तु किस जगह है, बच्चे व शिक्षक दरी पर बैठे हैं, पंखा छत पर टंगा है । घड़ी दीवार पर, टेबल कुर्सी से बड़ी है, खिड़की दीवार में है न कि फर्श पर आदि ।

5.2 प्राप्त जगह (कागज) का सअनुपात उपयोग कर पाना।

दूसरा चरण

5.1 प्रकृति में अपने आस-पास की वस्तु के संयोजन व अंतराल/अनुपात का अवलोकन करना, देखना । पैटर्न चिन्हित कर पा सकना।

5.2 प्राप्त जगह का सअनुपात उपयोग कर पाना । यह अनुमान लगा पाना कि प्राप्त जगह में उक्त विषय किस प्रकार संयोजित होगा ।

5.3 प्राप्त जगह में रेखा, रंग, आकृति, टेक्शचर आदि से नए संयोजन विकसित कर पा सकना ।

5.4 विषय वस्तु को अपने अनुपात, निश्चित दूरी, कोण पर चित्रित कर पा सकना ।

6. टेक्शचर (सतह के प्रभाव) के बारे में

पहला चरण (प्रवेश)

6.1 प्रकृति में अपने आस-पास की वस्तुओं की सतह के भिन्न-भिन्न टेक्शचर का अवलोकन कर पाना, देखना। जैसे - तने की छाल, हथेली पर रेखाएं, दरी पर खुरदुरापन ।

दूसरा चरण

6.1 प्रकृति में अपने आस-पास की वस्तुओं के सतह के भिन्न-भिन्न टेक्शचर का अवलोकन कर पाना, देखना।

6.2 चित्र कार्य में सतह के उपयुक्त प्रभाव को दर्शा पाना।

6.3 सतह के प्रभाव को दिखाने के नए तरीके विकसित कर पाना ।

7. चित्र कार्य के माध्यमों व उपकरणों से परिचय का होना व इन्हें काम में लेने की क्षमता को पाना ।

पहला चरण (प्रवेश)

7.1 पेन्सिल, क्रेयान, ब्रश आदि से ठीक से पकड़ना, इनसे इच्छित प्रभाव पा पाना ।

7.2 उक्त उपकरणों को उचित दबाव से चला पा सकना, दाएं-बाएं, ऊपर-नीचे चला पाना ।

7.3 पानी व रंग का उचित अनुपात बना पाना ।

7.4 ब्रश, क्रेयान आदि से आवश्यकतानुसार मोटी, पतली रेखाएं बना पाना ।

7.5 कागज को ठीक से पकड़ना व कागज के रख रखाव की ओर ध्यान देना।

7.6 प्रत्येक आकार के कागज पर कार्य कर पाना।

दूसरा चरण

7.1 सीधे जलरंग से कार्य कर पाना ।

7.2 मिश्रित माध्यमों से आवश्यकतानुसार काम कर पाना । जैसे पेन्सिल, वाटर कलर, क्रेयान एक साथ ।

7.3 अन्य उपकरण रूई, स्प्रे, आदि काम में ले पाना ।

7.4 आवश्यकता पड़ने पर अपने चाहे गये आकार के कागज काटकर बना पाना व किस कार्य के लिए किस आकार का कागज उपयुक्त रहेगा, यह अनुमान लगा पाना ।

7.5 उपकरणों से विभिन्न प्रयोग कर पाना ।

8. सृजन व पाठ को अपने दैनन्दिन जीवन, समुदाय, दुनिया के सन्दर्भ में देखना, व्याख्यायित करना, उसके प्रति अपने मत बनाना, दूसरों के मत को समझना, सृजन व पाठ पर लिखित-मौखिक संवाद करना, (चित्र प्रस्तुति, ग्रहणशीलता, संवाद, समीक्षा) (क्षेत्र सीमित नहीं किए जा सकते)

पहला चरण (प्रवेश)

8.1 चित्र प्रस्तुति/प्रदर्शन में हिस्सेदारी निभाना, मदद करना, मदद लेना ।

8.2 अन्य के चित्र को समझना, उसके बारे में मत बनाकर प्रस्तुत करना, व उस पर प्रश्न कर पाना ।

8.3 स्वयं के बनाए गए चित्र के बारे में पूछे गए प्रश्नों का सकारण जवाब दे पाना ।

दूसरा चरण

8.1 आपके कार्य को शीर्षक देना ।

8.2 चित्र प्रस्तुति /प्रदर्शन में हिस्सेदारी निभाना, मदद करना, मदद लेना ।

8.3 अन्य के चित्र कार्य को समझना । उसके बारे में मत बनाकर लिखित/मौखिक तरीके से प्रस्तुत करना व उस पर प्रश्न कर पाना।

8.4 चित्र में सुन्दर, असुन्दर लग रही बातों को सकारण रेखांकित करना ।

8.5 चित्र में आई चीजों/बातों का अपने आस-पास से संबंध बनाकर देखना ।

8.6 चित्रों पर मित्रों, शिक्षक, परिवार, समुदाय में चर्चा कर पाना ।

8.7 स्वयं व अन्य के चित्रों पर पूछे गये प्रश्नों का जवाब दे पाना, उदाहरण खोज कर बता पाना, चर्चा को आगे बढ़ा पाना ।

9. कोलाज के बारे में

पहला चरण (प्रवेश)

9.1 कोलाज बनाने के लिए अपना विषय बना पाना, विषय की कल्पना कर पाना ।

9.2 इच्छित आकार के आवश्यकतानुसार कागजों को काटकर/फाड़कर इच्छित/अपेक्षित स्थान पर चिपका पाना ।

9.3 कागजों को काटकर/चिपकाकर नए संयोजन विकसित कर पाना ।

दूसरा चरण

9.1 कोलाज बनाने के लिए अपना विषय बना पाना। विषय की कल्पना कर पाना, कोलाज बनाने की सामग्री की कल्पना कर सामग्री जुटा पाना, विषय व सामग्री को विकसित कर पाना ।

9.2 इच्छित आकार के आवश्यकतानुसार कागजों को काटकर/फाड़कर इच्छित/अपेक्षित स्थान पर चिपका पाना ।

9.3 कोलाज के लिए मिश्रित माध्यमों में कार्य कर पाना । जैसे कागजों को चिपकाकर, रंग कर, कहानी-कविता लिखकर, चित्र बनाकर आदि ।

9.4 विभिन्न प्रकार की सामग्री से संयोजन विकसित कर पाना ।

10. छापा पद्धति के बारे में

पहला चरण (प्रवेश)

10.1 पेपर/गत्ते पर चाही गई आकृति बनाकर, उसको काटकर ब्लॉक्स बना पाना व काटे गये ब्लॉक को दूसरे कागज पर रखकर रंग लगा पाना ।

10.2 ब्लॉक्स से समान पैटर्न वाली डिजाईन बना पाना ।

दूसरा चरण

10.1 पेपर/गत्ते पर चाही गई आकृति बनाकर, उसको काटकर ब्लॉक्स बना पाना व काटे गये ब्लॉक को दूसरे कागज पर रखकर विभिन्न माध्यमों से अनेक इच्छित रंग लगा पाना ।

10.2 ब्लॉक्स से समान-असमान पैटर्न वाली डिजाईन बना पाना ।



साहित्य के बारे में

उद्देश्य/क्षमतायें/दक्षताएं

साहित्य वाले क्षेत्र में दो हिस्से बनाये गए हैं । पहला तो साहित्य को पढ़ने/सुनने, समझने संबंधित है, दूसरा मौलिक लेखन

के बारे में । उक्त दोनों हिस्सों में संवाद को समान मान कर लिया गया है ।

1. साहित्य के पाठ/ग्रहणशीलता व उस पर संवाद के बारे में ।

पहला चरण

1.1 मानक व स्थानीय भाषा में रचनाओं को सुनना, सुनकर समझना ।

1.2 सुनी गई रचनाओं पर प्रश्न कर पा सकना, पूछे गए प्रश्नों का जवाब देना ।

1.3 सुनी गई रचनाओं को याद कर हाव-भाव, लय-ताल के साथ समूह, शाला, समुदाय में प्रस्तुत कर पाना व उन पर चर्चा करना।

1.4 रचना पर अपना मत बनाना, मत की मौखिक अभिव्यक्ति कर पाना, रचनाओं में सुन्दर-असुन्दर लग रही बातों को रेखांकित कर पाना ।

1.5 कल्पना कर पाना कि अमुक पात्र के स्थान पर मैं होता या उक्त घटना में यह नहीं वह होता तो क्या होता ?

1.6 साहित्य के पाठ से प्राप्त अर्थ को स्वयं व अपने आस-पास की दुनिया से संबंध बनाकर देखना ।

दूसरा चरण (प्रवेश)

1.1 मानक व स्थानीय भाषा में रचनाओं को सुनना/पढ़ना, सुनकर/पढ़कर समझना ।

1.2 सुनी/पढ़ी गई रचनाओं पर प्रश्न कर पा सकना, पूछे गए प्रश्नों का जवाब दे पाना ।

1.3 सुनी/पढ़ी रचनाओं को यादकर/पढ़कर हाव-भाव, लय-ताल के साथ समूह, शाला, समुदाय में प्रस्तुत कर पा सकना, उनके बारे में चर्चा करना ।

1.4 रचना पर अपना मत बनाना, मत की लिखित/मौखिक अभिव्यक्ति कर पाना, रचनाओं में सुन्दर/असुन्दर लग रही बातों को सकारण रेखांकित करना ।

1.5 कल्पना कर पाना कि अमुक पात्र के स्थान पर मैं होता या कोई अन्य पात्र होता और उक्त घटना में यह नहीं वह होता या घटना ऐसे नहीं वैसे होती तो क्या होता?

1.6 पत्र पत्रिकायें पढ़ना, उनमें अपनी पसंद की रचनाओं को चिन्हित करना, उन्हें प्रस्तुत कर पा सकना, उनके बारे में चर्चा कर पा सकना ।

1.7 साहित्य के पाठ से प्राप्त अर्थ को स्वयं व अपने आस-पास की दुनिया से संबंध बनाकर देखना ।

1.8 विधाओं के अन्तर को समझना व अन्तर को सकारण चिन्हित कर पा सकना ।

1.9 एक ही विधा की अनेक रचनाओं के अर्थ के अन्तर/तुलना को सकारण चिन्हित कर पाना ।

2. अपने स्तर पर मौलिक लेखन करना । लेखन के लिए अपना विषय बनाना ।

पहला चरण (प्रवेश)

2.1 अपने आस-पास की दुनिया का अवलोकन करना, अवलोकन के अनुभव को सुना पाना ।

2.2 विभिन्न वस्तुओं के आपसी संबंधों को जोड़कर कविता/कहानी बनाकर सुना पाना।

2.3 कल्पना करके कविता, कहानी बनाकर सुना पाना ।

2.4 शब्दों, वाक्यों, दृश्यों को जोड़कर/देखकर कविता/कहानी में तब्दील कर सुना पाना ।

दूसरा चरण

2.1 लेखन के लिए अपना विषय सुनिश्चित कर पा सकना, विषयों में विविधता का होना ।

2.2 विषय के लिए कल्पना कर पाना ।

2.3 अपने आस-पास प्रकृति/दुनिया का अवलोकन करना उसे अपना विषय बनाना ।

2.4 दिए गए विषय पर कार्य कर अपेक्षित रचना में तब्दील कर पाना।

2.5 दो वस्तुओं, वाक्यों, शब्दों, दृश्यों को जोड़कर कविता/कहानी में तब्दील कर पाना ।

2.6 विषय संबंधी साक्षात्कार कर पाना ।

2.7 विषय संबंधी पत्र लिख पाना ।

2.8 समूह में स्वतंत्र व सामूहिक रूप से पुस्तक निर्माण कर पाना (चित्र भी शामिल) ।

2.9 कविता/कहानी/चित्र पोस्टर बना पाना ।

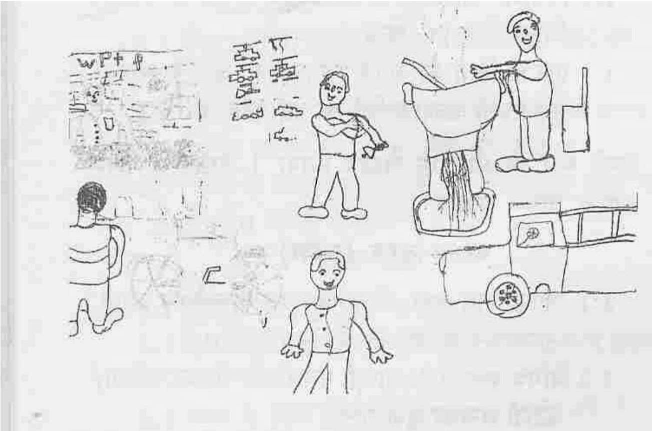
2.10 विधाओं को एक दूसरे में तब्दील कर पाना ।

2.11 रचनाओं में अपनी 'बात' को सटीक तरीके से अभिव्यक्त कर पाना । अभिव्यक्त करने के आत्म विश्वास को पाना ।

2.12 वाक्यों को पूरा लिखना ।

2.13 व्याकरण संबंधी बातों का ध्यान रखना ।

2.14 रचनाओं को शीर्षक दे पाना ।



नाटक के बारे में

नाटक के बारे में सबसे पहले एक बात मैं बहुत जोर देकर स्पष्ट कर दूं कि नाटक करने के कोई निश्चित नियम नहीं होते, यहां तक कि कोई भी कला बिल्कुल निश्चित नियमों में नहीं बंधी होती (या बंधना नहीं चाहिए) । प्रत्येक कलाकार अपने नियम स्वयं गढ़ता है । हां यह बात इस बात पर निर्भर करती है कि पूर्व में किए गए कार्यों में वह कितनी अपर्याप्तता महसूस करता है और अब वह जो करने जा रहा है उसके लिए उसे क्या-क्या करने की आवश्यकता है? और मुझे लगता है इसी तरह से कलाओं की शैलियों, तकनीक आदि में विकास संभव होता है कि आवश्यकता की 'आवश्यकता' नए विकासशील 'तौर-तरीकों' को जन्म देती है । और वे तौर-तरीके सदा एक से नहीं होते । जरूरत के अनुसार बदलते हैं ।

आगे बढ़ने से पूर्व संक्षेप में यह समझने का प्रयास करते हैं कि नाटक में हम अन्तत: करते क्या हैं ?

नाटक में हम मंच पर एक काल्पनिक संसार की निर्मिति करते हैं जिसे कि मैं 'भिन्न परिस्थिति' कह रहा हूं ।

इस काल्पनिक संसार की निर्मिति हम प्रेक्षकों को कुछ बताने-दिखाने के लिए करते हैं । यह कुछ ही हमारी विषय-वस्तु है और इस विषय वस्तु के मूल में द्वन्द है ।

इस काल्पनिक संसार में विषय वस्तु की प्रस्तुति में हम उपकरणों का सहारा लेते हैं जैसे-संवाद, अभिनय, संगीत, छाया, प्रकाश, सज्जा, वेशभूषा, मंच आदि ।

हम बात को आगे बढाएं कि हमने अपने शिक्षाक्रम में नाटक को तीन भागों में विभाजित करके देखा है जो कि नाटक करने की क्रमबद्धता से ही संबंधित है ।

पहला - नाटक (की भिन्न परिस्थिति) को देखने, समझने व उसमें रुचि होने से संबंधित ।

दूसरा - नाटक करने के लिए परिस्थिति निर्माण व अपनी विषय-वस्तु के होने से संबंधित ।

तीसरा- नाटक करने के लिए सहायक उपकरणों में दक्षता प्राप्त करने से संबंधित ।

यूं तो तीनों बिन्दु अपने आप में एक दूसरे के पूरक हैं लेकिन अभ्यास करने व अलग-अलग बातों पर ध्यान देकर पूर्ण एक नाटक बनाने के संदर्भ में अलग-अलग समझना व करना आवश्यक है ।

उद्देश्य/क्षमतायें/दक्षताएं

1. नाटक क्या है ? इसकी भिन्न परिस्थिति/अवस्था/अनुभव को समझना, नाटक देखना व चर्चा कर पाना ।

(प्रवेश)

1.1 'अन्य' के पात्र को मैं या अन्य निभा रहा है इसका बोध होना ।

1.2 पात्र/नाटक को निभाने की नाट्य परिस्थिति को सामान्य परिस्थितियों से भिन्न करके देख पाना अर्थात नाटक करना जीवन की सामान्य स्थितियों व अन्य विधाओं जैसे कहानी/कविता सुनाने आदि से किस प्रकार भिन्न है ।

1.3 समूह, शाला, समुदाय में नाटक को देखने की अभिरुचि का होना ।

1.4 देखे गये नाटक को समझ पाना । नाटक पर प्रश्न कर पा सकना । पूछे गये प्रश्नों का जवाब देना ।

1.5 देखा गया नाटक कैसा लगा उस पर अपना मत मौखिक/लिखित तरीके से अभिव्यक्त कर पाना व नाटक पर चर्चा कर पा सकना।

1.6 नाटक को अपने व आस-पास की दुनिया से संबंध बना कर देखना ।

1.7 समुदाय में नाट्य परम्पराओं की जानकारी और देखने में रुचि का होना ।

2. नाट्य परिस्थिति का निर्माण कर नाट्य प्रस्तुति कर पाना, नाटक के लिए अपनी विषय वस्तु विकसित कर पाना ।

पहला चरण (प्रवेश)

2.1 स्वयं व अपने आस-पास के व्यक्तियों के हाव-भाव, क्रियाकलापों व वस्तुओं का अवलोकन कर पाना। उनको अपना विषय बनाना ।

2.2 छोटे-छोटे दृश्यों/बातों के एकल व सामूहिक अभिनय मूक/संवाद कर पाना।

2.3 सुनी गई कहानी/कविता/घटना के आधार पर नाट्य परिस्थिति का निर्माण कर पाना ।

2.4 नाट्य प्रस्तुति के लिए दृश्य की कल्पना कर पाना । कल्पना को वास्तविक ढांचा प्रदान करना ।

2.5 नाट्य प्रस्तुति के लिए उपयुक्त सामग्री की कल्पना कर पाना, यथासंभव सामग्री निर्माण कर पाना ।

2.6 नाट्य प्रस्तुति में आत्मविश्वास, उत्साह, आनन्द का होना ।

2.7 नाटक को समूह, शाला, समुदाय में प्रस्तुत कर पाना।

दूसरा चरण

2.1 स्वयं व अपने आस-पास के व्यक्तियों के हाव-भाव, क्रियाकलापों व वस्तुओं का अवलोकन करना, उनको अपना विषय बनाना ।

2.2 छोटे - बड़े दृश्यों, बातों, सुनी गई कहानी/कविता/घटना के आधार पर नाटक कर पाना ।

2.3 नाट्य प्रस्तुति के लिए दृश्य की कल्पना कर पाना, कल्पना को वास्तविक ढांचा प्रदान कर पाना ।

2.4 नाट्य प्रस्तुति के लिए उपयुक्त सामग्री की कल्पना कर पाना, सामग्री निर्माण कर पाना ।

2.5 नाट्य प्रस्तुति में आत्म-विश्वास, उत्साह, आनन्द का होना ।

2.6 नाट्य प्रस्तुति करने के लिए अपनी विषय-वस्तु विकसित कर पाना ।

2.7 नाटक में विभिन्न शैलियों का प्रयोग कर पाना अथवा विभिन्न शैलियों में नाटक कर पाना ।

2.8 नाटक को समूह, शाला, समुदाय में प्रस्तुत कर पा सकना ।

2.9 कल्पना से विषय वस्तु सृजित करना, नये पात्रों की कल्पना कर पा सकना, पात्रों में विविधता को ला पाना।

2.10 नाटक समूह द्वारा कार्यक्षेत्र विभाजित करके नाटक करना जैसे स्क्रिप्ट तैयार करने वाले बच्चे, निर्देशन करने वाले बच्चे, ध्वनि प्रभाव देने वाले बच्चे आदि।

2.11 नाटक का निर्देशन कर पाना ।

3. नाटक करने के लिए नाट्य उपकरणों की जानकारी का होना, इनकी महत्ता को समझना, उपकरणों को दक्षता से काम में लेना (अभिनय, वेशभूषा, सैट, ध्वनि-प्रकाश, सामग्री, मंच व्यवस्था)

पहला चरण (प्रवेश)

3.1 'अन्य' पात्र का हाव-भाव, लय-ताल के साथ अभिनय कर पाना ।

3.2 अभिनय के दौरान संवादों का उच्चारण परिस्थितिनुसार गति, लय, विभिन्नता से कम-ज्यादा कर पाना । संवाद याद कर पाना।

3.3 अभिनय के दौरान शरीर के क्रियाकलापों को उक्त पात्र के अनुरूप करना ।

3.4 मंच व्यवस्था निर्मित कर पा सकना ।

3.5 नाटक की सामग्री के साथ नाटक कर पा सकना ।

3.6 ध्वनि प्रभाव को काम में लेना ।

दूसरा चरण

3.1 अन्य पात्र का हाव-भाव, लय-ताल के साथ अभिनय कर पाना, अनेक तरह के हाव-भाव प्रदर्शित कर पाना।

3.2 अभिनय के दौरान संवादों का सटीक व परिस्थितिनुसार गति, लय, विभिन्नता से उतार चढ़ाव के साथ उच्चारण कर पाना ।

3.3 अभिनय के दौरान शरीर के क्रिया-कलापों को उक्त पात्र के अनुरूप करते हुए विकसित करना।

3.4 मंच व्यवस्था विकसित कर पाना।

3.5 सामग्री के साथ नाटक कर पा सकना, व सामग्री स्वयं बना पाना, जुटा पाना, उसकी कल्पना कर पाना ।

3.6 ध्वनि प्रभाव को काम में लेना, ध्वनि प्रभाव के कल्पना द्वारा तरीके विकसित करना ।

3.7 समूह द्वारा व स्वयं अपनी स्क्रिप्ट विकसित करना ।

3.8 कहानी/कविता द्वारा स्क्रिप्ट बनाना ।

3.9 प्रकाश व्यवस्था के तरीके विकसित करना ।

3.10 संवाद याद कर पाना ।



हस्तकार्य

हस्तकार्य के बारे में अलग से लिखने का आशय यह नहीं है कि मैं इसे अभिव्यक्ति कलाओं से बहुत अधिक पृथक करके देख रहा हूं । मूलत: हस्तकार्य भी अभिव्यक्ति का ही माध्यम है । सामान्यत: हस्तकार्य का अर्थ हम उन कौशलों, दक्षताओं से लगाते हैं, जिनमें सीधे हाथ से कार्य किया जाए और उन कार्यों में नफासत, सुघड़ता आदि हो जैसे क्ले, कारपेण्टरी, दस्तकारी आदि। लेकिन यह अभिव्यक्ति के स्तर तक पहुंचने की मात्र प्रारंभिक अवस्था ही है । क्ले कारपेण्टरी, आदि करके भी हम अपनी बात को अभिव्यक्त ही करते हैं । मैं विशेष आग्रह इस बात करना चाहूंगा कि हस्तकार्य भी हमारी अभिव्यक्ति कला की श्रेणी में आए। जिस प्रकार हम चित्र, नाटक आदि में बच्चों के कल्पना करने, अपना विषय बनाने आदि पर जोर देते हैं । हस्तकार्य को भी उसी दिशा में विकसित किया जाये ।

यहां पर क्ले, कारपेण्टरी, दस्तकारी के बारे में पहले तो प्रकृति अनुसार जो समानताएं हैं उनके आधार पर अपेक्षित क्षमताओं का विवरण, फिर क्रमश: क्ले, कारपेण्टरी, दस्तकारी के विवरण प्रस्तुत हैं ।

उद्देश्य/क्षमताएं/दक्षताएं

1. अवलोकन करना

1.1 अपने आस-पास की चीजों की त्रिआयामी प्रकृति का अवलोकन करना ।

1.2 चीजों के आपस में जुड़े होने के तौर-तरीकों का अवलोकन करना । जैसे पंखा छत से हुक के माध्यम से जुड़ा है, मेज से पाये कील से जुड़े हैं, हथौड़ी में हत्था किस तरह जुड़ा है, कैंची के दो भागों को एक करने में किस प्रकार के पेच का सहयोग है आदि।

1.3 चीजों की सतह का अवलोकन करना जैसे पेड़ की छाल कैसी है, कप कितना चिकना है, टायर की सतह कैसी है ।

1.4 जिन पदार्थों से चीजें बनी हैं, उन पदार्थों की प्रकृति का अवलोकन करना, समझना ।

2. सामग्री के गुणों को व्यवहारिक स्तर पर समझना, कार्य के लिए अपेक्षित सामग्री की कल्पना कर पाना ।

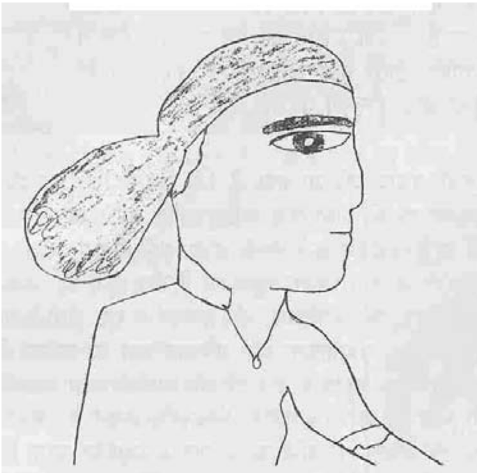
3. कार्य के लिए विषय की कल्पना कर पाना, अपना विषय बनाना । विषय को साकार रूप देने की क्षमता अर्जित करना ।

4. कार्य में नफासत, सुघड़ता सौन्दर्य की ओर ध्यान दे पाना।

क्ले

1. मिट्टी की प्रकृति को समझना, मिट्टी को कूटकर, छानकर, भिगोकर, गूंथकर तैयार कर पाना ।
2. अनुमान लगा पाना कि उक्त कार्य के लिए मुझे कितनी मिट्टी की आवश्यकता पड़ेगी ।
3. मिट्टी की पट्टी, गोला, बेलन, घन बनाना ।
4. मिट्टी की पट्टी में से इच्छित आकृति काटकर निकाल पाना ।
5. मिट्टी की पतली, मोटी बत्तियां बनाकर पट्टी, गोला, बेलन, घन पर चिपकाकर आकृतियां बनाना ।
6. पट्टी, घन, बेलन आदि पर अनेक प्रकार से छापे अंकित करके समान-असमान पैटर्न की डिजाईन बनाना ।
7. मिट्टी के लोथ को गढ़कर अपने मनचाहे आकार दे पाना उसके लिए विभिन्न उपकरण काम में लेना । जैसे चाकू, तार, तिनके इत्यादि ।
8. कार्य करते समय साफ-सफाई, नफासत, सुघड़ता पर ध्यान देना ।
9. मिट्टी की बनाई आकृति में गोलाई, कोण, लम्बाई की स्पष्टता व बारीकी पर ध्यान देना ।
10. मिट्टी के कार्य पर इच्छित रंग लगा पाना ।
11. आवश्यकतानुसार मिट्टी के साथ-साथ अन्य सामग्री जैसे रंगीन कांच, चूड़िया, पंख, तिनके, सरकण्डे आदि काम में ले पाना।
12. मिट्टी को मनचाहे तरीके से मोड़ पाना, गोलाई दे पाना, कोने निकला पाना ।
13. मिट्टी में पानी की आवश्यकता-अनावश्यकता का अनुमान लगा पाना ।
14. मिट्टी के गोले, घन, बेलन के छोटे-बड़े आकारों को आपस में जोड़कर आकृतियां विकसित कर पाना ।
15. मिट्टी से कई आकार की आकृतियां बना पाना । जैसे छोटी-बड़ी, लम्बाई में, गोलाई में, ऊंचाई में, वर्गाकार, घनाकार आदि।

16. मिट्टी की बनाई आकृतियों पर अनेक तरीकों से टेक्शचर लगा पाना ।
17. मिट्टी की बनाई बत्तियां, गोले घन आदि को जोड़कर अमूर्त आकृतियां बनाना ।
18. चाक पर कार्य कर पाना ।
19. मिट्टी से बनाई गई चीजों को आग में पका पाना व चीजों को बर्निशिंग कर पाना ।



कारपेण्टरी

कारपेण्टरी में दो तरीके से कार्य अपेक्षित हैं । पहला हार्ड बोर्ड को काटकर चिपकाकर आकृति बनाना, दूसरा लकड़ी के बड़े टुकड़ों को तराशकर आकृति बनाना ।

1. बोर्ड को काटकर, चिपकाकर आकृति बनाने संबंधी

1.1 आरी चला पाना, हथौड़ी से कीले ठोककर, स्क्रू लगाकर व चिपकाकर दो टुकड़ों को आपस में जोड़ पाना ।

1.3 हार्ड बोर्ड में से गोल, लम्बे, चौड़े, कोणीय टुकड़े काट पाना ।

1.4 हार्ड बोर्ड में छेद कर पाना, छेद करके जाली बना पाना।

1.5 हार्ड बोर्ड को काटकर चिपकाकर मनचाही आकृतियां काट पाना ।

1.6 काटकर समान-असमान पैटर्न की डिजाईन बना पाना। डिजाईन को बोर्ड की पट्टी पर चिपका पाना ।

1.7 इच्छित कार्य के लिए कितना बोर्ड लगेगा, अनुमान लगा पाना ।

1.8 बोर्ड को काटकर, चिपकाकर, ठोककर चाहे गए विषय में तब्दील करना, अपना विषय स्वयं बनाना, बोर्ड पर/कार्य करने के लिए स्वयं रेखाचित्र बनाना ।

2. लकड़ी को तराशकर आकृति बनाने संबंधी

2.1 लकड़ी को गोल, वर्गाकार, घनाकार आकार दे पाना, काटकर-छीलकर ।

2.2 लकड़ी के छोटे-बड़े आकारों के गुटके आपस में जोड़कर आकृति बना पाना ।

2.3 लकड़ी को छीलकर चिकना बना पाना ।

2.4 लकड़ी की पट्टी को कुरेदकर उसमें छोटी-छोटी आकृतियां बना पाना ।

2.5 लकड़ी के छोटे-बड़े टुकड़ों को तराशकर, काटकर इच्छित छोटे-बड़े आकारों की वस्तुएं बना पाना ।

2.6 लकड़ी के कार्य में तार, कपड़े, रंग, कांच आदि आवश्यकतानुसार सामग्री का अनुमान लगाना व काम में ले पाना ।

2.7 लकड़ी के लम्बे, चौकोर, गोल टुकड़ों को जोड़कर अमूर्त आकृतियां बना पाना ।

दस्तकारी

दस्तकारी में संभावित सामग्री जो हो सकती है वह गत्ता, रंगीन कागज, कपड़ा, धागे, तार आदि । इनके साथ आवश्यकतानुसार अनेक प्रकार की सामग्री काम में ली जा सकती है ।

1. गत्ते को अनेक आकारों में काटकर उसके ऊपर विभिन्न तरह के रंगीन कागज चिपका पाना ।
2. गत्ते को काटकर अपनी इच्छित आकृतियां बना पाना । आकृति काटने के लिए गत्ते पर स्वयं रेखाचित्र बनाएं । (कटआउट्स)
3. गत्ते व रंगीन कागज को काटकर-चिपकाकर त्रिआयामी आकृतियां बना पाना। जैसे गुड़िया, मुखौटे, आदि ।
4. समान-असमान पैटर्न की डिजाईन बना पाना।
5. सामग्री से अमूर्त आकृतियां बना पाना ।◆

